A.K. Gour

No. of Book/Chapter/Volume/Published Book-

Year	2016	2017	2018	2019	2020
No. of Book /Chapter/PB	-	-	-	-	2

Report- A.K. Gour

Name of Teacher 1	**Title of Paper 2**	**Title of Book 3**	**Name of Author 4**
A.K. Gour	स्वन विज्ञान का स्वरूप एवं शाखाऐं	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	डॉ. रमेश टंडन
A.K. Gour	दानलीला (सुन्दर लाल शर्मा की व्याख्या)	लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य	डॉ. रमेश टंडन
Name of Publisher 6	**National/International 7**	**ISSN/ISBN No. 8**	**Year of Publication 9**
वैभव प्रकाशन	National	ISBN 978-93-89989-46-5	May 2020
सर्वप्रिय प्रकाशन दिल्ली	National	ISBN 978-93-89989-86-1	Sep. 2020

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

लेखक परिचय...
डॉ. रमेश कुमार टण्डन

छत्तीसगढ़ के जिला- रायगढ़, ग्राम- फूलबंधिया में स्थित एक निम्न वर्गीय किसान परिवार में पिता श्री कौशलप्रसाद टण्डन व माता श्रीमती फूलकुँवर टण्डन की कुटिया में एक बालक ने आपात काल के वक्त (1975 ई0) अंग्रेजी पांचांग के अनुसार नव वर्ष के तृतीय दिवस (03 जनवरी) को अपने जीवन का आरम्भ करते हुए; चिमनी (ढिबरी) की रोशनी में, चारपाई में बैठकर अध्ययन संबंधी गृहकार्य एवं प्राथमिक विद्यालयीन अध्ययन को पूरा किया; माध्यमिक, उच्च माध्यमिक की पढ़ाई, बिना चप्पल के चार किलोमीटर की दूरी को पैदल तय करके ग्राम सोण्डका में प्रथम श्रेणी में पूरी की; अट्ठारह वर्ष छः महीने मात्र की उम्र से परिवार के भरण-पोषण के लिए नौकरी का आरम्भ करते हुए, इक्कीस वर्ष छः माह की सटीक उम्र की अवस्था में पूर्णिमा उर्फ पुरान से विवाह रचाकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश, तदुपरान्त पैतृक परिवार के साथ स्वयं के परिवार का लालन-पालन करते हुए स्वाध्यायी छात्र के रूप में स्नातक की उपाधि प्रथम श्रेणी में, स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में, सेट, पी-एच. डी. की उपाधि हासिल की, वह है- इस पुस्तक के संपादक डॉ. रमेशकुमार टण्डन।

मौलिक पुस्तकें - 1. 'पीड़ा' (काव्य- संग्रह) सन् 2014 ई. में जयपुर से प्रकाशित।

संपादित पुस्तकें - 2. 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता का धरातलीय सच' फरवरी 2020 ई. में रायपुर से प्रकाशित।

शोध-प्रबंध - 3. 'साठोत्तरी हिन्दी निबन्धों में व्यंग्य: एक अनुशीलन' (पी-एच.डी. कार्य) 2005 ई.

आपके दर्जनों शोध-पत्र वाराणसी, जयपुर, मेरठ, हरिद्वार, नीमच, भिलाई, बिलासपुर स्थित अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक शोध-संगोष्ठियों में सहभागिता की है तथा शोध -पत्रों का वाचन किया है। आपकी अभिरूचि का क्षेत्र काव्य-लेखन है। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में नवाचार में गहरी रूचि है।

सम्प्रति, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया जिला- रायगढ़ छ.ग. में हिन्दी के सहायक प्राध्यापक हैं और शोध व लेखन कार्य में सक्रिय हैं।

मोबाईल से सम्पर्क करने का क्रमांक 9685671975 है।

ई-मेल पता है- rameshktandan@gmail.com

एम.ए. हिन्दी

भाषा-विज्ञान

प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

संपादक - डॉ. रमेश टण्डन

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
जिला- ... (छ.ग.)

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

ISBN-978-93-89989-46-5

●

प्रकाशक

वैभव प्रकाशन

अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748
e-mail : sahityavaibhav@gmail.com
www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : May 2020

मूल्य : 500.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

●

BHASHA VIGYAN EVAM HINDI BHASHA
BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by
Vaibhav Prakashan
Amin Para, Purani basti
Raipur, Chhattisgarh (India)
First Edition : May 2020
Price : Rs. 500.00

प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न अध्यायों में लिखित पठन सामग्री इसके लेखक/संकलनकर्ता के द्वारा एम.ए. हिन्दी के [illegible] छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। [illegible] पुस्तक के लिए इन पुस्तक के अध्याय लेखकों ने मूल किताबों अथवा [illegible] / शोध पत्रों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए हैं, अतः इन मूल किताबों अथवा [illegible] /शोध पत्रों अथवा नेट के सम्बद्ध लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा [illegible] बिना किसी पठन सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। [illegible] /[illegible] आदि के उल्लंघन के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे [illegible] लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र [illegible] होगा।

समर्पण

डॉ॰ नम्रता छाबड़ा

शांति टोप्पो

चिदम्बर कुलकर्णी

आशीष कुमार नागर

विशोक एन.

रविकिरन ताकसंडे

एश्ले माइकल

AIIMS रायपुर के इन जिंदा दिलों को, जिन्होंने कोरोना मरीजों की सेवा की, लॉक डाउन की स्थिति में संपादित यह किताव, जो भले ही इनसे असंबंधित है, समर्पित है''

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)

इकाई –01

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ– वैदिक तथा लौकिक संस्कृत एवं उनकी विशेषताएँ। भारतीय आर्य भाषाएँ– पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

इकाई – 02 हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

हिन्दी की उप भाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप

हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खण्ड्येत्तर, हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति।

इकाई – 04 हिन्दी के विविध रूप

सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, मातृभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा,हिन्दी की संवैधानिक स्थिति। हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ – आंकड़ा संसाधन और शब्द संसाधन, वर्तनी शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी और मानकीकरण। देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण।

इकाई– 05 लघु उत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से।

अंक योजनाः– **अंक विभाजन**

इकाई 01 आलोचनात्मक प्रश्न	01	15 X 1 =	15
इकाई 02 आलोचनात्मक प्रश्न	01	15 X 1 =	15
इकाई 03 आलोचनात्मक प्रश्न	01	15 X 1 =	15
इकाई 04 आलोचनात्मक प्रश्न	01	15 X 1 =	15
इकाई 05 लघु उत्तरीय प्रश्न	05	02 X 5 =	10
अति लघु उत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न	10	01 X 10=	10
	योग	–	80
	आंतरिक मूल्यांकन	–	20

अनुक्रम

क्र.	अध्याय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण	प्रो. चरणदास बर्मन	13
2	भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार	डॉ. श्रीमती नीलम तिवारी	21
3	भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य	डॉ. जयती विश्वास	25
4	भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति	डॉ. बी नन्दा जागृत	43
5	अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	59
6	स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ	प्रो. एस कुमार गौर	65
7	वागवयव और उनके कार्य	डॉ. श्रीमती नीलम तिवारी	72
8	स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण	प्रो. राजकुमार लहरे	80
9	स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन	डॉ. दिनेश श्रीवास	90
10	स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा	श्री आशीष राठौर	96
11	स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण	डॉ. दिनेश श्रीवास	101
12	रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ	श्रीमती आशा भारद्वाज	109
13	रूपिम की अवधारणा और भेद– मुक्त, आवध्य, अर्थदर्शी, संबंधदर्शी; रूपिम के प्रकार्य	प्रो. राजकुमार लहरे	120
14	वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद	डॉ. धनेश्वरी दुबे	135
15	वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण; गहन संरचना, बाह्य संरचना	डॉ. दिनेश श्रीवास	145
16	अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ में सम्बन्ध	प्रो. करुणा गायकवाड़	152
17	पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता	प्रो. अमोला कोर्राम	158
18	अर्थ परिवर्तन	डॉ. डेजी कुजूर	168

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

भाग – 2

19 हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ	प्रो. संध्या पाण्डेय	183
20 लौकिक संस्कृत की विशेषताएँ, पाली की विशेषताएँ	श्री घनश्याम टण्डन	189
21 प्राकृत की विशेषताएँ, अपभ्रंश की विशेषताएँ	प्रो. दिनेशकुमार संजय	198
22 शौरसेनी की विशेषताएँ, अर्द्ध मागधी की विशेषताएँ	श्रीमती आशा भारद्वाज	202
23 आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण	डॉ. दिनेश श्रीवास	208
24 पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी का भौगोलिक विस्तार व उनकी विशेषताएँ	डॉ. दिनेश श्रीवास	216
25 बिहारी, पहाडी तथा इनकी बोलियों का भौगोलिक विस्तार तथा विशेषताए	डॉ. दिनेश श्रीवास	224
26 खड़ी बोली, ब्रज, अवधी का भौगोलिक विस्तार तथा उनकी विशेषताएँ	डॉ. शिवदयाल पटेल	230
27 उपसर्ग, समास	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	241
28 प्रत्यय	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	255
29 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम	प्रो. करुणा गायकवाड़	269
30 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के विशेषण, क्रिया	डॉ. रेखा दुबे	284
31 हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति	श्रीमती आशा भारद्वाज	297
32 राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	312
33 मातृभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	319
34 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण	श्रीमती किरण शर्मा	327
35 हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ – आंकड़ा संसाधन, शब्द संसाधन, वर्तनी शोधक, मशीनी अनुवाद	श्री मदन मलहोत्रा	340
36 हिन्दी और मानकीकरण	प्रो. वन्दना रानी खाखा	350

1.

भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण

– प्रो0 चरणदास बर्मन*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान),
इकाई – 01 (भाषा और भाषा विज्ञान)
भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा विज्ञान स्वरूप और व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

भाषा का अर्थ

भाषा मानव जाति की प्राचीनतम् उपलब्धि है। ज्ञान का विस्तार भाषा से ही संभव हुआ है। भाषा से ही संवेग की अभिव्यक्ति हुई है। भारत में भाषा का चिरकाल से अध्ययन होता आ रहा है। वर्तमान परिस्थिति में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन आधुनिक जगत की देन है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्रत्येक मनुष्य के मन में परिस्थितियों के अनुसार भावों का उदय होता है। वह उन भावों को दूसरों के सामने प्रकट करना चाहता है और दूसरों के मन में उठे विचारों को भी जानना चाहता है। "अतः समाज में रहने तथा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए उसे सदैव आपस में विचार–विनिमय करना पड़ता है। कभी वह स्फुट शब्दों या वाक्यों द्वारा अपने भाव को प्रकट करता है, तो कभी सिर या हाथ हिलाने से भी उसका काम चल जाता है।"[1]

*जन्म : 01 जुलाई 1971, माता : श्रीमती बुधियारीन बर्मन, पिता : श्री परदेशी बर्मन, धर्मपत्नी : श्रीमती पुष्पा बर्मन, शिक्षा : एम. ए., बी. एड., स्लेट, रूचि : गीत, संगीत, साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य, अकादनिक कार्य : राजकीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता, अन्य : 1997 से 2000 तक संविदा प्राध्यापक, शिक्षाकर्मी वर्ग–03 एवं 01 पर कार्यरत हुए, सम्प्रतिः सहायक प्राध्यापक– हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय चन्द्रपुर, आवासीय पता : बारापीपर, तहसील– डभरा, जिला– जांजगीर चांपा (छ.ग.), पिन कोड– 495692, मो0 नं0 : 9977962545, मेल : charanburmandas@gmail.com

संस्कृत	–	नव	नीड
ग्रीक	–	NIOS	NEOS
लैटिन	–	PATER	NIDS
जर्मन	–	VATER	NEST
अंग्रजी	–	FATHER	NEST
फारसी	–	पिदर	नौ

विलियम जोन्स ने अनुभव किया कि यह साम्य निराधार नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि उपर्युक्त भाषा की एक ही जननी है, जिसका अस्तित्व अब नहीं रहा। तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह परिकल्पना की गई कि भारोपीय भाषा का स्वरूप कैसा रहा होगा। लिखित प्रमाण के अभाव में किसी भाषा के मूल रूप की परिकल्पना अब महत्त्वपूर्ण नहीं समझी जाती। एककालिक दृष्टि से दो भाषाओं के विभिन्न स्तरों की तुलना की जा सकती है।

संदर्भ:–

पाण्डेय, अपर्णा; भाषा विज्ञान, पायनियर पब्लिशर, 2020

www.hindivibhag.com

www.scotbuzz.org

♦●♦

"मुझे पैतृक–भाषा बोलने में कभी–भी संकोच नहीं होगा, मैं विदेश में भी अपने लोगों के बीच इस भाषा का प्रयोग करके गर्व महसूस करूँगा।"

(छत्तीसगढ़ी भाषा के संदर्भ में)

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया

6

स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ

– प्रो0 एस कुमार गौर*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान), इकाई – 02 (स्वन प्रक्रिया)

स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण

ध्वनि को ही स्वन कहा जाता है तथा ध्वनि के अध्ययन से संबंधित शास्त्र के लिए आज स्वन विज्ञान (PHONETICS) या (PHONOLOGY) का प्रयोग होता है। PHONOLOGY शब्द का संबंध ग्रीक शब्द PHONE से है, जिसका अर्थ – ध्वनि तथा LOGY शब्द, विज्ञान का समानार्थी है। अतः PHONOLOGY का शाब्दिक अर्थ ध्वनि विज्ञान या स्वन विज्ञान है। PHONOLOGY और PHONETICS का प्रयोग एक ही अर्थ में सामान्यतः होता है किन्तु डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने इनमें सूक्ष्म अर्थगत अंतर माना है।

स्वन विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत मानव द्वारा बोली जाने वाली ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। यह बोली जाने वाली ध्वनियों के भौतिक गुण, उनके शारीरिक उत्पादन, श्रवण ग्रहण और

*जन्म : 26 जनवरी 1980, माता : श्रीमती हेमलता गौर, पिता : श्री विशाल राम गौर, शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी), डी. एड., नेट, रूचि : साहित्य अध्ययन, लेखन, अकादमिक कार्य : राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों में सहभागिता, आई एस बी एन किताब में चैप्टर प्रकाशन, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया, जिला– राजनांदगाँव, छ.ग., आवासीय पता : वार्ड क्र. 13, संजयनगर दुर्गा चौक, डोंडीलोहारा, जिला– बालोद, छ.ग., मो0 नं0 : 9407691137, 8462925940, मेल आई डी : sgaur3498@gmail.com

तंत्रिका–शारीरिक बोध की प्रक्रियाओं से संबंधित है। ध्वनि विज्ञान भाषा विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण शाखा है। पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान की तुलना में ध्वनि विज्ञान अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा की आधारशिला ध्वनि होती है।

स्वन (ध्वनि) का अर्थ एवं परिभाषा :–

ध्वनि विज्ञान भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है। इसका संबंध भाषा के भौतिक आधार ध्वनि से है। इसमें मानव मुख से निकलने वाली ध्वनियों का महत्वपूर्ण अध्ययन किया जाता है, जिनका संबंध भाषा से होता है। ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत सबसे प्रथम एवं महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ध्वनि किसे कहते हैं ? ध्वनि का अर्थ है– दो पदार्थों के मिलन से होने वाली आवाज, जिसे हम कानों से सुनते हैं। व्यापक अर्थ में जो कानों में सुनाई पड़े, वह ध्वनि है परंतु भाषा विज्ञान में ध्वनि सीमित या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होता है। विभिन्न विद्वानों ने ध्वनि की परिभाषाएँ इस प्रकार की है–

(1) डॉ0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार :– "भाषा ध्वनि भाषा में प्रयुक्त ध्वनि की वह लघुतम इकाई है, जिसका उच्चारण और श्रोतव्यता की दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्ति हो।"

(2) डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार :– "मानव ध्वनि यंत्र द्वारा उत्पादित और निश्चित श्रावक गुणों से युक्त ध्वनि को भाषा ध्वनि या भाषाण ध्वनि कहा जाता है।"

(3) सीता राम झा श्याम के अनुसार :– "मनुष्य के फेफड़ों से निस्सृत एवं विभिन्न भाषाण अव्यवों से व्यवस्थित रूप में उच्चारित सार्थक ध्वनि ही "भाषा ध्वनि" कहलाती है।"

(4) डेनियाज जोंस के अनुसाार :– "ध्वनि मनुष्य के विकल्प परिहीन नियत स्थान और निश्चित प्रयत्न द्वारा उत्पादित और श्रोतेन्द्रिय द्वारा अविरल रूप से गृहित शब्द लहरी है।"

स्वन विज्ञान का स्वरूप

भाषा की लघुतम इकाई स्वन है। इसे ध्वनि नाम भी दिया जाता है। ध्वनि के अभाव में भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा विज्ञान में स्वन के अध्ययन संदर्भ को "स्वन विज्ञान" की संज्ञा दी जाती है। ध्वनि शब्द ध्वन धातु में इन (ई) प्रत्यय के योग से बना है। भाषा विज्ञान के गंभीर

अध्ययन में ध्वनि विज्ञान एक महत्वपूर्ण शाखा बन गई है। स्वन (ध्वनि) के अध्ययन में तीन पक्ष माने जाते हैं, यथा –

1. उत्पादक, 2. संग्राहक, 3. संवाहक।

1. उत्पादक :– स्वन उत्पन्न करने वाले व्यक्ति या वक्ता को स्वन उत्पादक की संज्ञा देते हैं ।

2. संग्राहक :– संग्राहक या ग्रहणकर्ता श्रोता है, जो ध्वनि को ग्रहण करता है।

3. संवाहक :– संवाहक या संवहन करने वाला माध्यम जो मुख्यतः वायु की तरंगों के रूप में होता है।

स्वन प्रक्रिया में तीनों अंगों की अनिवार्यता स्वतः ही सिद्ध है। जब मुख के विभिन्न अंगों में से किन्हीं दो या दो से अधिक अवयवों के सहयोग से ध्वनि उत्पन्न होगी तभी स्वन (ध्वनि) का अस्तित्व संभव है। ध्वनि उत्पादक अवयवों की भूमिका के अभाव में स्वन का अस्तित्व असंभव है।

ध्वनि उत्पादक अवयवों की उपयोगी भूमिका के बाद यदि संवाहक या संवहन माध्यम का अभाव होगा तो स्वन का आभास असंभव होगा। माना एक व्यक्ति एक वायु अवरोधी कक्ष में बैठकर ध्वनि करता है, तो वायु तरंग कक्ष से बाहर नहीं आ पाती और बाहर का व्यक्ति ध्वनि ग्रहण नहीं कर सकता है। इस प्रकार स्वन प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है।

संग्राहक या श्रोता के अभाव में ध्वनि उत्पादन का अस्तित्व स्वतः ही शून्य हो जाता है। इस प्रकार स्वन प्रक्रिया में वक्ता (उत्पादक), संग्राहक, संवाहक तीनों का होना अति आवश्यक है ।

भाषा अध्ययन में स्वन विज्ञान का विशेष महत्व है, क्योंकि अन्य वृहत्तर इकाइयों का ज्ञान इसके ही आधार पर होता है। इसके ही अंतर्गत विभिन्न ध्वनि उत्पादक अवयवों का अध्ययन किया जाता है स्वनों के शुद्ध ज्ञान के पश्चात शुद्ध लेखन को सबल आधार मिल जाता है। उच्चारण में होने वाले विविध संदर्भों के परिवर्तनों का ज्ञान भी संभव होता है। स्वन विज्ञान में विभिन्न ध्वनियों के अध्ययन के साथ उनके उत्पादन की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है। इसी अध्ययन क्रम में ध्वनि उत्पादक विभिन्न अंगों की रचना और उनकी भूमिका का भी अध्ययन किया जाता है। स्वन के साथ स्वनिम का भी विवेचन एवं विश्लेषण किया जाता है।

समय, परिस्थिति और प्रयोगानुसार विभिन्न ध्वनियों में परिवर्तन होता रहता है। ध्वनि के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने कुछ ध्वनि नियम निर्धारित किए हैं। इन नियमों के अध्ययन के साथ–साथ ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ और ध्वनि परिवर्तन के कारणों पर विचार किया जाता है।

स्वन (ध्वनि) विज्ञान की शाखाएँ

स्वन विज्ञान के अंतर्गत स्वनों का अध्ययन–विश्लेषण किया जाता है। स्वन विज्ञान ध्वनि से संबंधित विज्ञान है। ध्वनि विज्ञान भाषा विज्ञान का मूल स्तंभ अथवा आधार है। ध्वनि विज्ञान से अनभिज्ञ भाषा–शिक्षण वैसा ही निरर्थक है, जैसे शरीर के रचना विज्ञान से अनभिज्ञ चिकित्साशास्त्र शिक्षण। इसी आधार पर स्वन विज्ञान की तीन शाखाएँ मानी जाती है–

1. औच्चारणिक स्वन विज्ञान,
2. संचारणात्मक (सांवहनिक) स्वन विज्ञान,
3. श्रावणिक स्वन विज्ञान।

1. औच्चारणिक स्वन विज्ञान :– इसके अंतर्गत ध्वनि के उच्चारण और उससे जुड़ी बातों का अध्ययन विश्लेषण किया जाता है। औच्चारणिक शाखा ध्वनि विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इसके अंतर्गत ध्वनियों के उच्चारण, ध्वनियों की उत्पत्ति, वाग्यंत्रों (ओष्ठ, जिव्हा, दांत, कंठ, तालू) का अध्ययन किया जाता है। ध्वनि का उच्चारण वाग्यंत्र से होता है। उच्चारण अवयव दो प्रकार के होते हैं– चल अवयव और अचल अवयव। औच्चारणिक स्वन विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें उच्चारण और उसमें संबद्ध बातों का अध्ययन किया जाता है। औच्चारणिक स्वन विज्ञान के द्वारा मानवीय ध्वनियों की उत्पादन प्रक्रिया, वाग्य यंत्र, उच्चारण स्थान का ज्ञान होता है।

ध्वनि के उच्चारण की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है – फेफड़ों से आने वाली वायु श्वास नलिका में आकर स्वर यंत्र के पास विकृत होती है। स्वरतंत्रीय के सहयोग से हम इसे मनचाहा रूप देते हैं और आवश्यकता अनुसार मुख विवर या नासिका विवर से बाहर निकालते हैं। बाहर निकलने से पूर्व उसे जिव्हा, कंठ, तालू, दांत, होंठ के सहारे इच्छित रूप देते हैं। मुख या नाक से बाहर आकर यह ध्वनि की संज्ञा पाती है।

2. संचारणात्मक (सांवहनिक) स्वन विज्ञान :– मुख से उत्पन्न होने वाली भाषिक ध्वनि श्रोता के कानों तक कैसे पहुंचती है? इसका

अध्ययन सांवहनिक स्वन विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। भौतिकी में ध्वनि संवहन के लिए किसी माध्यम का होना अनिवार्य माना गया है क्योंकि निर्वात में ध्वनि का संवहन नहीं होता। किसी विज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत उच्चारित ध्वनियों का और भाषा में उपलब्ध सुर, तान, दीर्घता, नासिक्य, घोषत्व एवं प्राणत्व आदि का भी वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

ध्वनि विज्ञान की सांवहनिक स्वन विज्ञान के अंतर्गत होने वाले अध्ययन में मुख मापक, पैलेटोग्राफ, कायमोग्राफ, क्रोमोग्राफ, स्पेक्टोग्राफ, पैटर्न प्लेबैक, कोनोग्राफ, असेलोग्राफ, स्पीच स्ट्रेचर, एक्सरे, टेप रिकॉर्डर इत्यादि अनेक यंत्रों की सहायता ली जाती है। ध्वनि की लहरें वायु में जो कंपन उत्पन्न करती है उसके कारण वह हमें सुनाई पड़ती है। भौतिक विज्ञान में ध्वनि की तरंगों के प्रकार तथा उनकी गति का विस्तृत अध्ययन किया जाता है किंतु भाषा विज्ञान में यह अध्ययन अपेक्षित नहीं है। यहाँ इतनी बात ही महत्वपूर्ण है कि ध्वनि निर्वात में नहीं चल सकती तथा माध्यमों में उसकी गति बदल जाती है। वक्ता के मुख से बोली गई भाषा (ध्वनि) वायु में संवहन करती हुई अंततः श्रोता के कानों में पहुँचती है।

ध्वनियों के उच्चारणात्मक अभिलक्षणों की तरह भौतिक अभिलक्षण भी होते हैं, जो उन्हें एक दूसरे से भिन्न करते हैं। ये गुण हवा के भार में जो छोटे बदलाव होते हैं, उनसे संबंध रखते हैं। उन विभेदों को हमारे कान अनुभव करते हैं, जिनका हम ध्वनि स्पेक्ट्रोग्राफ और ऑसिलोग्राफ द्वारा अध्ययन करते हैं। इनमें प्रमुख बदलाव हैं– मूल आवृत्ति, आयाम और आवृत्ति बैण्ड। मूल आवृत्ति बैण्ड हवा के भार की आवृत्तियों के दोहराव होते हैं। यह हर व्यक्ति का अपना होता है। इस प्रकार पुरूष, स्त्री और उनमें वयस्क और अवयस्क के भी प्रशस्त विस्तार (Broad Range) होते हैं। वयस्क पुरूष में ध्वनियों की मूल आवृत्ति 50–155 आवृत्ति प्रति सेकंड होती है, जिन्हें हट्र्ज कहते हैं। महिलाओं में ज्यादातर 165–255 हट्र्ज होती है तथा 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में यह आवृत्ति 400–600 हट्र्ज होती है। शास्त्रीय संगीत में विभिन्न रागों को अलग–अलग मूल आवृत्तियों में गाया जाता है।

मूल आवृत्ति के अलावा हवा के भार में अधिकता और कमी से भी ध्वनियों में बदलाव होता है, जिन्हें वायुकण के विश्राम बिन्दु से अधिकतम दूरी के आधार पर मापा जाता है। इस दूरी के विस्तार को आयाम कहते

है। इसे अंग्रेजी में भाषा जाता है।

3. श्रावणिक स्वन विज्ञान :– श्रावणिक स्वन विज्ञान को भौतिकी अथवा श्रोत स्वन विज्ञान भी कहते हैं। श्रवण का संबंध कर्ण इन्द्रियों से है। श्रावणिक स्वन (ध्वनि) विज्ञान जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें ध्वनियों के श्रवण (सुने जाने) का अध्ययन होता है। मुख से उच्चारित ध्वनि वायु की तरंगों से होती हुई श्रोता के कान तक पहुँचती है। कान से मस्तिष्क तक ध्वनि पहुँचती है, जहाँ ध्वनि के अर्थ का बोध होता है। श्रावणिक स्वन विज्ञान के अंतर्गत हम इस बात पर विचार करते हैं कि ध्वनि किस तरह हमारे कानों में पहुँचती है और हमें सुनाई पड़ती है।

कान को तीन भागों में बाँटा गया है – बाह्य कर्ण, मध्यवर्ती कर्ण और अभ्यंतर कर्ण। बाह्य कर्ण के दो भाग होते हैं। पहला टेढ़ा-मेढ़ा भाग जो पीछे जाने वाली वायु को रोकता है व दूसरा कर्ण नलिका है। नलिका के भीतरी छोर पर झिल्ली होती है, यह बाह्य कर्ण को मध्यवर्ती कर्ण से जोड़ती है। दूसरी ओर अभ्यंतर कर्ण, बाहरी छोर से जुड़ी होती है। कपिलदेव द्विवेदी ने लिखा है कि – "वायुमंडल में संचरण करने वाली ध्वनि तरंगें किस प्रकार कर्ण पटल को प्रभावित करती हैं और संवेदक तंत्रिकाओं द्वारा किस प्रकार मस्तिष्क तक पहुँचती हैं, जहाँ वे अपने स्वरूप के अनुसार पहचानी जाती हैं, इनका अध्ययन श्रावणिक स्वन विज्ञान में होता है।"

निष्कर्ष :– भाषा अध्ययन में स्वन विज्ञान का विशेष महत्व है क्योंकि अन्य वृहत्तर इकाईयों का ज्ञान इसके ही आधार पर होता है। स्वरों के शुद्ध ध्यान के पश्चात लेखन को समुचित आधार मिल जाता है। भाषा विज्ञान में स्वन के अध्ययन संदर्भ को स्वन विज्ञान की संज्ञा दी जाती है। स्वन के अभाव में भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि भाषा की आधारशिला स्वन (ध्वनि) होती है।

संदर्भ :–

1. विकिपीडिया मुक्त ज्ञान कोश एवं ई–पीजी पाठशाला।
2. डॉ0 भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञान, किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशक इलाहाबाद, पृष्ठ– 173, 176, 296।
3. सीताराम झा श्याम – भाषा विज्ञान तथा हिंदी भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ – 113 ।

4. कपिलदेव द्विवेदी – भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ – 127,138।
5. देवेंद्र नाथ शर्मा – भाषा विज्ञान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ – 195।
6. डॉ0 विवेक शंकर – आधुनिक भाषा विज्ञान, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ – 77, 78, 79।
7. डॉ0 भोलानाथ तिवारी – हिंदी ध्वनियाँ और उसका उच्चारण, इलाहाबाद प्रकाशन, पृष्ठ – 107।

♦●♦

"मैं अनेक विषयों का जानकार बनते हुए, किसी एक प्रिय विषय का विशेषज्ञ बनना चाहता हूँ।"

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया

डॉ. रमेश टण्डन

छत्तीसगढ़ के जिला-रायगढ़, ग्राम- फूलबहिया में स्थित एक निम्न वर्गीय किसान परिवार में पिता श्री कौशलप्रसाद टण्डन व माता श्रीमती फूलकुँवर टण्डन की कुटिया में एक बालक ने आपातकाल के वक्त (1975 ई.) अंग्रेजी पंचांग के अनुसार नव वर्ष के तृतीय दिवस (03 जनवरी) को अपने जीवन का आरम्भ करते हुए; चिमनी (डिबरी) की रोशनी में, चारपाई में बैठकर अध्ययन संबंधी गृहकार्य एवं प्राथमिक विद्यालयीन अध्ययन को पूरा किया; माध्यमिक, उच्च माध्यमिक की पढ़ाई, बिना चप्पल के चार किलोमीटर की दूरी को पैदल तय करके ग्राम सोण्डका में प्रथम श्रेणी में पूरी की; अट्ठारह वर्ष छः महीने मात्र की उम्र से परिवार के भरण-पोषण के लिए नौकरी का आरम्भ करते हुए, इक्कीस वर्ष छः माह की सटीक उम्र की अवस्था में पूर्णिमा उर्फ पुराम से विवाह रचाकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश, तदुपरान्त पैतृक परिवार के साथ स्वयं के परिवार का लालन-पालन करते हुए स्वाध्यायी छात्र के रूप में स्नातक की उपाधि प्रथम श्रेणी में, स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में, सेट, पी-एच. डी. की उपाधि हासिल की, वह है- इस पुस्तक के संपादक डॉ. रमेशकुमार टण्डन।

मौलिक पुस्तकें - 1. 'पीड़ा' (काव्य- संग्रह) सन् 2014 ई. में जयपुर से प्रकाशित।

संपादित पुस्तकें - 2. 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी-अस्मिता का धरातलीय सच' (कुल पृष्ठ - 216) फरवरी 2020 ई. में रायपुर से प्रकाशित। 3. एम. ए. हिन्दी के लिए 'भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा' (कुल पृष्ठ - 360) मई 2020 में (लॉक-डाउन की स्थिति में) रायपुर से प्रकाशित। 4. एम. ए. हिन्दी के लिए 'भारतीय साहित्य', संस्करण: सितम्बर 2020।

शोध-प्रबंध - 5. 'साठोत्तरी हिन्दी निबन्धों में व्यंग्य: एक अनुशीलन' (पी-एच.डी. कार्य) कुल पृष्ठ - 617, 2005 ई.

आपके दर्जनों शोध-पत्र वाराणसी, जयपुर, मेरठ, हरिद्वार, नीमच, भिलाई, बिलासपुर स्थित, अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक शोध-संगोष्ठियों एवं वेबिनार में सहभागिता की है तथा शोध -पत्रों का वाचन किया है। आपकी अभिरूचि का क्षेत्र काव्य-लेखन है। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में नवाचार में गहरी रूचि है।

सम्प्रति, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया जिला- रायगढ़ छ.ग. में हिन्दी के सहायक प्राध्यापक हैं और शोध व लेखन कार्य में सक्रिय हैं। मोबाईल क्रमांक 9685671975 है।

ई-मेल पता - rameshktandan@gmail.com

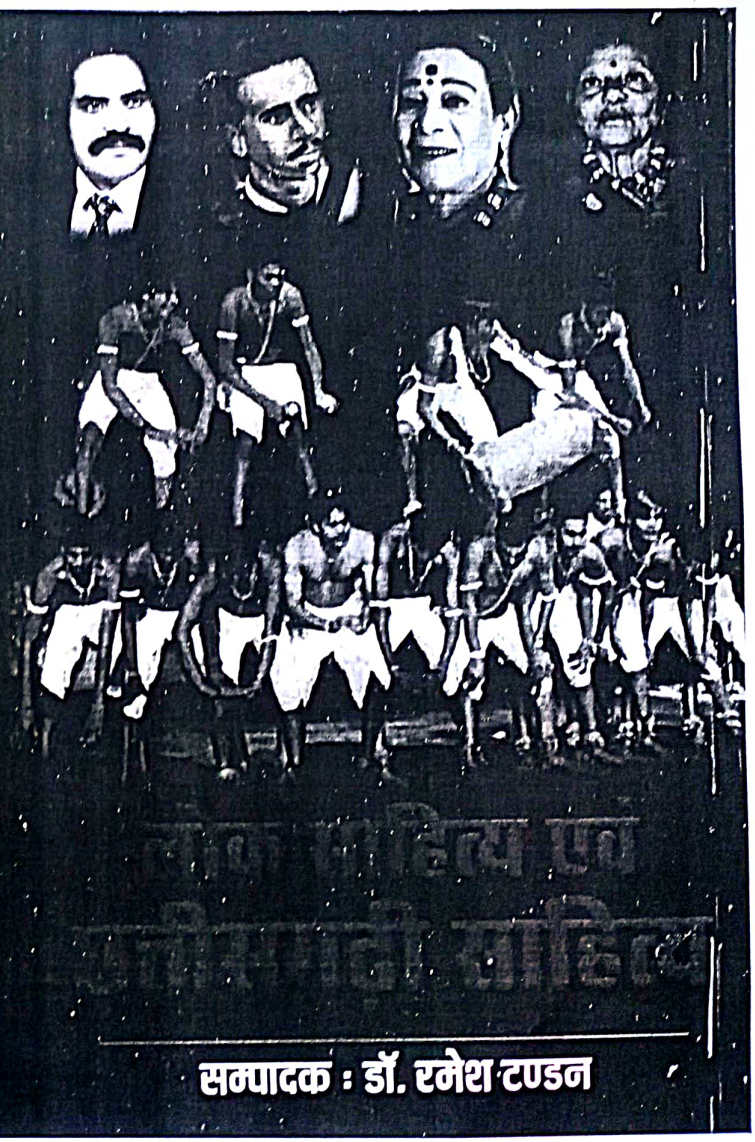

सम्पादक : डॉ. रमेश टण्डन

लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य

डॉ. रमेश टण्डन

ISBN- 978-93-89989-86-1

●

प्रकाशक

सर्वप्रिय प्रकाशन

प्रथम मंजिल, चर्च रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मो. 9425358748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

●

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : सितम्बर २०२०

मूल्य : ३०० रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

LOK SAHITYA EVAM CHHATTISGARHI SAHITYA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Sarvapriya Prakashan

First Floor, Church Road, Kashmiri Gate, Delhi

First Edition : September 2020

Price : Rs. 300.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्त्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से सकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों के द्वारा मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए गए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

समर्पण

संत गुरू बाबा घासीदास

(आविर्भाव : 18.12.1756, तिरोभाव : 1850)

"परम पूज्य संत शिरोमणि गुरू बाबा घासीदास, जिनके नाम पर छत्तीसगढ़ का एक मात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापित है एवं जिन्हें सतनाम धर्म के प्रवर्तक और सतनामी समाज के गुरू के रूप में छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध लोक गीत/नृत्य – 'पंथी' के द्वारा पूजा जाता है, को यह 'लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य' समर्पित है"

अनुक्रम

क्र.	अध्याय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	लोक साहित्य– लक्षण, परिभाषा, क्षेत्र	– डॉ0 श्रीमती धनेश्वरी दुबे	13
2.	लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान	– प्रो0 चरणदास बर्मन	25
3.	लोक संस्कृति अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति	– प्रो0 श्रीमती माग्रेट कुजूर	43
4.	लोक–संस्कृति और साहित्य, लोक साहित्य अवधारणा	– प्रो0 चरणदास बर्मन	56
5.	लोक गीत, लोक नाट्य, लोक–कथा	– प्रो0 श्रीमती संध्या पाण्डेय	76
6.	लोक–गाथा, लोक–नृत्य, लोक संगीत	– प्रो0 श्रीमती संध्या पाण्डेय	90
7.	छत्तीसगढ़ साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ	– श्रीमती पुष्पांजलि दासे	98
8.	छत्तीसगढ़ी उपन्यास का उद्‌भव और विकास	– प्रो0 चरणदास बर्मन	112
9.	छत्तीसगढ़ी नाटक का उद्‌भव और विकास	– प्रो0 गोवर्धन सूर्यवंशी	138
10.	छत्तीसगढ़ी एकांकी का उद्‌भव और विकास	– प्रो0 गोवर्धन सूर्यवंशी	145
11.	छत्तीसगढ़ी निबन्ध का उद्‌भव और विकास	– प्रो0 गोवर्धन सूर्यवंशी	152

12. छत्तीसगढ़ी कहानी का उद्‌भव और विकास
– प्रो0 रमेश खैरवार 157

13. छत्तीसगढ़ी महाकाव्य का उद्‌भव और विकास
– प्रो0 वंदना रानी खाखा 163

14. सुन्दरलाल शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
– प्रो0 बाल किशोर भगत 180

15. दानलीला (सुन्दरलाल शर्मा) की व्याख्या
– प्रो0 एस कुमार गौर 191

16. दानलीला (सुन्दरलाल शर्मा) की समीक्षा
– श्री मनीष कुमार कुर्रे 211

———ooo———

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

1.

लोक साहित्य – लक्षण, परिभाषा, क्षेत्र

– डॉ. श्रीमती धनेश्वरी दुबे *

सेमेस्टर – IV प्रश्नपत्र – IV (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य) इकाई 01

मनुष्य सृष्टि के आरंभ में प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता था। उसके आचार और विचार में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं थी। उसके सारे कार्य हंसना, बोलना, उठना, बैठना आदि में कोई विषयगत अथवा भाषागत सजावट नहीं थी, बल्कि उसका सहज उद्‌गार प्रकट होता था। यही लोक साहित्य का मूल मानस है। समस्त विश्व के लोक साहित्य की यही व्याख्या है, चाहे जिस भाषा का साहित्य हो, जिस समाज की झंकार हो, मूल एक है। शरीर और परिधान भले ही भिन्न हो, एक सूत्र है, एक श्रृंखला है। साधारण मानव की भोली–भाली सूक्ष्म कल्पना एक होती है, स्थान वैविध्य के कारण कुछ विशेषताएं भले ही आ जाएं।

लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। वह जीवन से घनिष्ठता से संबंधित है। लोक साहित्य एक परिभाषिक शब्द है जो लोक तथा साहित्य से मिलकर बना है। अतएव लोक साहित्य को समझने के पहले इन दोनों शब्दों को समझना उपयोगी होगा।

'लोक' शब्द का अर्थ –

'लोक' शब्द का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता आया है। अनेक पुरातन ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, भाष्यों, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, ऋषि व्यास की शतसाहस्त्री संहिता में अनेक स्थलों पर 'लोक' शब्द के प्रयोग को

*जन्म : 15 मार्च 1966, सतीगुढ़ी चौक रायगढ़, माता : श्रीमती चन्द्रिका चौबे, पिता : श्री भरत लाल चौबे, पति : श्री प्रदीप कुमार चौबे, संतान : एक पुत्री– गार्गी दुबे, शिक्षा : एम. ए. (दो स्वर्ण पदक), एम. फिल., पी–एच. डी., सम्प्रति : विभागाध्यक्ष (हिन्दी), शासकीय इं. वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.), Mo. 9406298740 Email- dubeydhaneshwari@gmail.com

रस– श्रृंगार रस को साहित्य में रसराज माना जाता है। कविवर शर्मा ने भी इसे विशेष रूप से महत्व दिया है। इसके अतिरिक्त भक्ति रस आदि पर भी इनकी लेखनी, अधिकार के साथ चलती रही है।

छन्द– दोहा, चौपाई, त्रोटक आदि अनेक पारम्परिक छन्दों का समायोजन इनकी रचनाओं में हुआ है। विभिन्न लोकोक्ति एवं लोक संस्कृति के बिम्बों से भावानुकूल छन्दों का सृजन कर इन्होंने अभिव्यक्ति को जीवंत बना दिया है।

इस प्रकार पं. सुन्दरलाल शर्मा की काव्यकला अत्यंत प्रभावपूर्ण, सरस और सजीव ठहरती है। पं. रघुवर प्रसाद द्विवेदी ने 'हितकारिणी पत्रिका' में यद्यपि 'दानलीला' की कटु आलोचना की है, तथापि अग्नि में तप्त स्वर्ण की भांति प्रगतिशील विचारधारा के पोषक श्री शर्मा की कला निखरती ही गयी। पं. माधवराव सप्रे ने इनकी प्रशंसा में जो कुछ लिखा है, वही इनके काव्य के मूल्यांकन की यथार्थ अभिव्यक्ति प्रतीत होती है। सप्रे के अनुसार, "मुझे विश्वास है कि भगवान कृष्णचन्द्र की लीला के द्वारा मेरे छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों का अवश्य कुछ सुधार होगा। मेरी यह आशा और भी दृढ़ हो जाती है, जबकि मैं यह देखता हूँ कि छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है।"

इस तरह, पंडित सुन्दरलाल शर्मा अद्वितीय, बहुआयामी, विलक्षण प्रतिभा के धनी, देशभक्त, समाज सुधारक, शिल्पकार, चित्रकार, नाटककार थे।

■■

अच्छाइयों का हर सम्भव प्रचार करें।
बुराइयों का कैसे निवारण हो, इस पर विचार करें।।

– डॉ0 रमेश टण्डन फूलबंधिया

15.

दानलीला की व्याख्या

– प्रो0 एस कुमार गौर *

सेमेस्टर – IV, प्रश्नपत्र– IV (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य), इकाई 04

छत्तीसगढ़ी – दानलीला

।। जै राजीवलोचन बबा ।।

(सब ले आगू देवता संउरे के मड़वना)

जगदिश्वर के पाँव में, आपन मूड़ नवाय ।
सिरी कृष्ण भगवान के, कहि हो चरित सुनाय ।।
मन में मन तो मिल गइस, आँखी रहिस समाय ।
मया फन्द में राधिका, मछरी अस तड़फाय ।।
जा दिन ते नन्दलाल ला, ठाढ़े देखेंव खोर ।
कांही नहीं सुहावै, गोई ! किरिया तोर ।।

शब्दार्थ :–मूड़ = सिर। फन्द = बन्धन/बन्धना। अस = जैसे। जा = जिस। ठाढें = खड़े। खोर = गली। गोई = सखी। किरिया = कसम। तोर = तुम्हारे/तुम्हारा।

भावार्थ :–पं. सुन्दर लाल शर्मा विरचित छत्तीसगढ़ी दानलीला में श्री कृष्ण की लीला का वर्णन किया गया है। यह श्रृंगार रस से ओत–प्रोत काव्य रचना है।

*जन्म : 26 जनवरी 1980, माता : श्रीमती हेमलता गौर, पिता : श्री विशाल राम गौर, शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी), डी. एड., नेट, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया, जिला– राजनांदगाँव, छ.ग., आवासीय पता : वार्ड क्र. 13, संजयनगर दुर्गा चौक, डोंडीलोहारा, जिला– बालोद, छ.ग., मो0 नं0 : 9407691137, 8462925940, मेल आई डी : sgaur3498@gmail.com

पं. सुन्दरलाल शर्मा सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण के चरणों की वन्दना करते हुए उनके चरित्र का गुणगान, राधा के माध्यम से करते हुए कहते हैं कि श्रीकृष्ण के मन से राधा का मन तो मिल गया है, राधा की आँखों में भी वे समा गए हैं। राधा कहती है कि प्रेम के इस बधन मे मै इस तरह बंध चुकी हूँ, जैसे बिना पानी मछली तड़पती रहती है। हे! सखी, सच कहती हूँ कि जिस दिन से मैंने राजा नन्द के लाल अर्थात् श्री कृष्ण को गली मे खडे हुए देखा है, उस दिन से तुम्हारी कसम खाकर कहती हूँ कि मुझे कुछ भी अच्छा नही लग रहा है।

सुन आज मुहाटी मे ठाढे रहेव, बेटवा जसुदा तहँ आइस ओ ।
हँस के मोला देख भऊ टेड़गा, करके मुंह ला बिचकाइस ओ ।।
तब दौर पोटार निकार के लाज, धरेव मुडा छौंड़ पराइस ओ ।
खरिखा के तनी वो धनी लरिका, ठेगवा मोला आज बताइस ओ ।।
खरिखा मे लरिका लिये, देखेव नन्द किशोर ।
चरखा सरिख तभिच ले, गिजरत है मन मोर ।।
कोनो जतन लगाय के, देते श्याम मिलाय ।
धोकर धोकर के रात दिन, परतेव तोरेच पाँय ।।

शब्दार्थ :–मुहाटी = दरवाजा, भउ = भौंह। टेड़गा = तिरछा या टेढ़ा। धरेव = पकड़ना। निकार = निकालकर या त्यागकर। पोटार = आलिंगन/गले लगाना। खरिखा = गायो का झुण्ड / बहुत अधिक। ठेगवा = ठेगा/अंगूठा। सरिखा = जैसा। गिजरत = घूमना। धोकर–धोकर = धो–धोकर। पांय = पांव।

भावार्थ :– हे! सखी, आज जब मै दरवाजे पर खड़ी थी, तभी माता यशोदा का बेटा अर्थात् श्री कृष्ण आया, मुझे देखकर हँसा और भौंह को तिरछा करके चिढ़ाने लगा। अपनी लज्जा त्यागकर उसने मुझे दौड़कर गले से लगा लिया और दूर भाग गया। गायो के झुण्ड में ग्वालो के साथ वह श्री कृष्ण आज फिर मुझे ठेगा दिखाते हुए भाग गया।

जिस दिन से गायो के झुण्ड मे ग्वालो के साथ श्री कृष्ण को देखी हूँ, तब से चरखा के समान मेरा मन उसके चारो ओर घूम रहा है। हे! सखी, किसी प्रकार से या कुछ भी उपाय करके मुझे उनसे मिला दो। मैं इसके लिए तुम्हारे पैरों को धो–धोकर रात–दिन प्रणाम करूँगी।

जब ले सपना मैं निहारेंव ओ । तब ले मिलकी नइ मारेंव ओ ।।
दिन रात मोला हयरान करैं । दुखदाई ये दाई ! जवानी जरैं ।।
मैं गोई ! अब कोन उपाय करौं ? के कहूँ दहरा बिच बूड़ मरौं ।।
मोला कोनों उपाय नइ सुझत है । ये गोई गोदना अस गूदत है ।।
जब ले वोला मूड़ में गौंर धरे । गर में बन फूल के माला पहिरे ।।
लवड़ी दुहनी कर में लटुका । पहिरे पिंयरा पियंरा पटुका ।।
मैं तो जात चले देख पारेंव ओ । वोला कुंज के कोती निहारेंव ओ ।।
तब ले गोई ! मैं बनि गेंव बही । थोरको सुरता मोला चेत नहीं ।।
चिटको नइ अन्न सुहावै मोला । बिरदान्त मैं कोन बतावौं तोला ।।
बढ के तोला गोई ! बतावौं नहीं । थोरको तोर मेर लुकावौं नहीं ।।
हस जानत मोर सुभाव गोई । कतको दुख होई बतावै कोई ।।
मिलि के कभू गोकुल जातेन ओ । मन के मरजी ला बतातेन ओ ।।
दुख औ सुख ला गोठियातेन ओ । घर सौंझक ले फिर आतेन ओ ।।

शब्दार्थ :– निहारेंव = देखना। हैयरान = व्याकुल। दहरा = भंवर। लवड़ी = लाठी। दुहनी = दूध दूहने का पात्र। लटुका = लटकाकर। बही = पगली/ बावरी। थोरको = थोड़ा भी। बिरदान्त = व्याकुलता। लुकावां = छिपाना। कभू = कभी। मरजी = मन की बात (रहस्य)। सुभाव = स्वभाव।

भावार्थ :– हे! सखी, जिस दिन से मैंने उन्हें सपने में देखा है, तब से मैंने अपना पलक तक नहीं झपकाया है। दिन–रात मेरी जवानी मुझे व्याकुल कर रही है। हे! सखी, अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ ? क्या किसी भंवर के बीच में डूब मरूँ ? मुझे कुछ भी उपाय सूझ नहीं रहा है, गोदना के समान प्रेम रंग मे डूब गयी हूँ। जिस दिन से उसे मैंने कुंज की गली में सिर में मोर–पंख, गले में जंगली फूलों का माला, हाथ में लाठी और दूध दूहने का पात्र तथा शरीर पर पीले वस्त्रों को धारण किए हुए देखा है; हे ! सखी, उसी दिन से मैं पगली सी हो गयी हूँ, मुझमें थोड़ा भी ज्ञान/चेतना नहीं है। अर्थात् मै अपना सुध–बुध खो चुकी हूँ। थोड़ा भी अन्न मुझे अच्छा नहीं लगता है। अपनी व्यथा मैं किसको बताऊँ। हे! सखी, मैं आपसे थोड़ा भी नहीं छिपाती हूँ और न ही बढ़ा चढ़ाकर बताती हूँ। तुम तो मेरा स्वभाव जानती हो, कितना भी दुख हो, क्या मैंने किसी से कहा है?

हे! सखी, हम सब मिलकर किसी दिन गोकुल जाकर, अपने मन की बात श्री कृष्ण को बताते। अपने सुख और दुख की बातों को एक–दूसरे से कहते और शाम होते तक वापस घर आ जाते।

घर लेतेन थोरिक दूध दही । गोठियास्थौं गोई ! मन आये नहीं ?
बेंच देतेन खीर बेचातिस तो । कन्हैया ला खवातेन खातिस तो ।।
लेवना बने लाल ला देतेन वो । लाहो ल जिनगी के ले लेतेन वो ।।
करेजा में खहोर के नातेन वो । मुंह देखत में सुख पातेन वो ।।
नन्द गौटिया के बेटवा हर ओ । मोर आइस आँखिन के तर ओ ।।
तब ले चिटको नइ भूलत है । मोर आँखिच आंखी में झूलत है ।।
जब कान टैंहेर लगाथौं ओ । घुंघरु के कभू गम पाथव ओ ।।
जब झक्क ले आगू निहारथौं ओ । दही चोर ला मैं देख पारथौं ओ ।
मन ही मन में लग्थै डर ओ । हरि दइस मोला कछु कर ओ ।
मन मोर चोराय सु लेइस है। मोहनी कछु थोप धौ देइस है ।।
कोन जान्थे जो कछु जाहे होई ? ये जवनी ला कइसे निभाहौं गोई ।।

शब्दार्थ :– खवातेन = खिलाना। लेवना = मक्खन। जिनगी = जिन्दगी/जीवन। करेजा = कलेजा/हृदय। टैंहेर = ध्यान लगाकर सुनना। पाथव = पाना। झक्क = अचानक। लग्थै = लगना। देइस = देना। चोराय = चुरा लेना। थोपना = मढ़ना/ आरोपित करना।

भावार्थ :– राधा अपनी सखियों से कहती है कि थोड़ा बहुत दूध–दही पकड़ लेते। हे! सखी, मेरी बात तुम्हें ठीक लग रही है या नहीं? दूध, दही, खीर बेच देते और यदि कन्हैया खाता तो उन्हें भी खिला देते। मक्खन श्री कृष्ण को दे देते और जिंदगी का सुख ले लेते अर्थात् प्रेमरस में डूबकर जीवन का आनंद ले लेते। अपने हृदय में बसा लेते, उसके मुख को देखकर ही सुख पा लेते। नन्द का पुत्र श्री कृष्ण मेरी आँखों में इस तरह गड़ गया है कि मैं उसे भूल नहीं पा रही हूँ। आँखों–ही–आँखों में वह झूल रहा है। जब कान लगाकर सुनती हूँ, तो उनके घुंघरू की आवाज सुनाई देती है। जब अचानक आँखों के आगे उसे देख पाती हूँ, तो मुझे मन–ही–मन डर लगता है, ऐसा लगता है कि उसने मुझ पर अपनी मोहनी डाल दिया है। कौन जानता है ? आगे क्या होगा ? हे! सखी, इस युवावस्था में मैं अपनी जिंदगी कैसे व्यतीत करूँ ?

देखे बिन नन्दलाल के, अब तो नइ रहि जाय ।
जात समा डर छाँड के, धरिहौं मोहन पांय ।।
चलो आज चलबो गोई, बृन्दावन के बाट ।
दही बेचबो जाय के, मथुरा जी के घाट ।।
ललिता औ चन्द्राबली, सुन प्यारी के बात ।।
चलो चलो चलबो गोई, कहि के पकरिन हात ।।

शब्दार्थ :– बेचबो = बेचना। चलबो = जाना। पकरिन = पकड़ना। हात = हाथ। धरिहौं = पकड़ना।

भावार्थ :– कवि के अनुसार राधा कहती है कि कृष्ण को बिना देखे अब मुझसे नहीं रहा जा रहा है। जाति और समाज के डर को त्यागकर अब मैं श्री कृष्ण के पाँव को पकड़ लूँगी। हे! सखियों, आज चलो, वृन्दावन जायेंगे। मथुरा के घाट पर जाकर दही बेचेंगे। ललिता, चन्द्राबली आदि सखियाँ राधा प्यारी की बात सुनकर मथुरा जाने की बात कहते हुए सखियाँ एक–दूसरे का हाथ पकड़ने लगीं।

जेतका दूध दही अउ लेवना । जोर जोर के दूधहा जेवना ।।
मोलहा खोपला चुकिया राखिन । तउला ला जोरिन हैं सब झिन ।।
दुहना टुकना बीच मढ़ाइन । घर घर निकरिन रौताइन ।।
एक जंवरिहा रनि सबे ठिक । दौंरी में फांदे के लाइक ।।
कोनो ढोंगी कोनो बुटरी । चकरेट्ठी दीखे जस पुतरी ।।
ऐन जवानी उठती सब के । पन्द्रा सोला बीस बरस के ।।
काजर आंजे अंलगा डारे । मूड कोराये पाटी पारे ।।
पांव रचाये बीरा खाये । तरूवा में टिकली चटकाये ।।
बड़का टेडगा खोपा पारे । गोंदा खोंचे गजरा डारे ।।
नगता लाली माग लगाये । बेनी में फुदरी लटकाये ।।
टीका बेंदी अलखन पारे । रेंगे छाती कुला निकारे ।
कोनो हैं झबा गथदावे । कोनो जुच्छा बिना कोराये ।।

शब्दार्थ :– जेतका = जितना। जेवना = भोजन। जोरिन = रखना। टुकना = बांस की बनी टोकरी। दौंरी = धान की फसल पेराई का पारंपरिक साधन या तरीका। ढोंगी = झूठ बोलने वाली। बुटरी = कम कद वाली। बीर

= पान। तरूवा = माथा। खोपा = जुड़ा। नगता = ताजा। झाबा = घना। जुच्छा = खाली। चुन्दी = सिर का बाल। ठलहा = खाली/बेकाम।

भावार्थ :– दूध, दही, मक्खन अलग–अलग पात्रों में भरकर, बड़ी टोकरी में रख कर अपने–अपने घर से ग्वालिन निकल गयी हैं। सभी हमउम्र हैं, जैसे दौरी में बंधने वाले बैल हमउम्र होते हैं। ये सभी ग्वालिन कोई ढोंगी, तो कोई छोटे कद वाली, तो कोई चौड़ी कमर वाली, पुतली के समान दिखाई दे रही हैं। सभी पन्द्रह, सोलह अथवा बीस बरस की हैं, अर्थात् सभी युवावस्था की दहलीज पर हैं। आँखों में काजल लगाकर, साड़ी का अलगा डालकर, बालों को संवारकर, जूड़ा बांधकर, पाँव को महुर रंग से सजाकर, मुँह में पान दबाकर, माथे पर टिकली लगाकर, बड़ा–बड़ा जूड़ा बनाकर और उसमें गैंदा का फूल और गजरा लगाकर सभी सखियाँ सजी हुई हैं। मांग में ताजा सिंदूर और बेणी में फूंदरा लगायी हुई हैं। टीका, बिंदी, अलका लगाकर अपनी छाती और कुल्हा को उभारते हुए चल रही हैं। कोई झब्बायुक्त, तो कोई बिना बाल संवारे ग्वालिन मदमस्त होकर चल रही हैं।

भुतही मन अस रेंगत जावैं । उड़ उड़ चुन्दी मुँह में आवैं ।।
पहिरैं रंग रंग के गहना । ठलहा कोनो अँग रहे ना ।।
कोनो पैरी चूरा जोड़ा । कोनो गंठिया कोनो तोड़ा ।।
कोनो ला घुंघरू बस भावैं । छुमछुम छुमछुम बाजत जावैं ।
खनर खनर चूरी सब बाजै । खुल के ककनी हाथ बिराजै ।।
पहिरे बहुंटा और पछेला । जेंखर रहिस सौख है जेला ।।
विल्लोरी चूरी हलबाही । रत्तन पिंउरी और टिकलाही ।।
कोनो छुच्छा लाख बँधाये । पिंउरा पटली ला झमकाये ।।
पहिरे हे हरियर धुमाही । कोनो छुटुवा कोनो पटाही ।।

शब्दार्थ :– खनर–खनर = खन–खन। पिंउरा = पीला। टिकलाही = टिकली। ओरमत = झूलना। रेंगत = चलना।

भावार्थ :– सभी ग्वालिन प्रेमरंग में मदमस्त होकर भूतनी की तरह चल रही हैं। चलते वक्त सिर के बाल उड़–उड़ कर मुँह में आ रहे हैं। सभी प्रत्येक अंग में आभूषण पहने हुए हैं, कोई अंग खाली नहीं है। कोई पैरी तो किसी ने गठिया पहन रखा है; किसी को घुंघरू बहुत भा रही है। छमछम–छमछम की आवाज करते हुए सभी ग्वालिन राधा के साथ चली जा

रही हैं। उनके हाथों में चूड़ियों की खन–खन की आवाज हो रही है। जिसको जैसा शौक है, वैसा आभूषण और वेशभूषा सभी ग्वालिनों ने धारण की हैं। कोई बिल्लौरी चूड़ी, तो कोई रतनपुरी पीले रंग की बिंदिया लगायी हुई हैं। कोई हरे रंग की, तो कोई पीले रंग की साड़ी पहनी हुई हैं।

करधन कंवर पहिर, रेंगत हाथी चाल ।
जेमा ओरमत जात है, मोती–हीरा–लाल ।।
चाँदी के सूता झमकाये । गोदना ठांव ठांव गोदवाये ।।
दुलरी तिलरी कटवा मोहैं । औ कदमाहीं सुर्रा सोहैं ।।
पुतरी अउर जुगजुगी माला । रूपस मुंगिया पोत विशाला ।।
हीरा लाल जड़ाये मुंदरी । सब झन चक चक पहिरे अंगरी ।।
पहिरे परछहा देवराही । छिनी अंगुरिया अउ अंगुठाही ।।
खोटिला टिकली ढार बिराजैं । खिनवा लुरको कानन राजैं ।।
तेखर खाले झुमका झूलै । देखत डउकन के दिल भूलै ।।
नाकन में सुन्दर नथ हालै । नहिं कोउ अंउठ तोला के खालै ।।
कोनो तिरिया पांव रचाये । लाल महाउर कोनो देवाये ।।

शब्दार्थ :– सूता = बाजूबंध। जुगजुगी = चमकदार। कानन = कान। मुंदरी = अंगूठी। अंगरी = अंगुली। दंग–दंग = बिना कपड़ा पहने। रांडी = विधवा। गोड़ = पैर। तिरिया = किनारे।

भावार्थ :– चांदी की बाजूबंध, गोदना गूदवाकर, चमकदार मूंग आदि की मालायें, सभी उंगलियों में हीरा, मोती आदि की अंगूठी सभी सखियाँ पहनी हुई हैं, अंगूठा और सबसे छोटी उंगली भी खाली नहीं है। माथे पर लाल, काले रंग की टिकली तो बानो में खिनवा पहनी हुई हैं। उसके नीचे झुमका लटक रहा है। इनके सौन्दर्य को देखकर पुरूषों का भी हृदय तरंगित हो रहा है। नाक में नथ हिल रही है। कोई भी अंग आभूषण से खाली नहीं है। किसी ने पाँव रंगें हैं, तो कोई लाल रंग से भी अपने पाँव को सजाया है।

चुटकी चुटका गोड़ सुहावै । चुटचुट चुटचुट बाजत जावै ।।
कोनो अनदट बिछिया दोनों । दंग दंग ले छुच्छा हैं कोनो ।।
राँड़ी समझै पांव निहारैं । ऊपर एंहवांती मुंह मारैं ।।

कोनो माथी सेंदुर लगाये । कोनो मेंहदी रचा हरसाये ।
एक एक ले सुघर हावय हैं । गिजगिज गिजगिज करत जात हैं ।
एक चीरा ही सी काढ़ि जाये । अउ आगू ला काजल बनाये ।।
पहिरे लुगरा लाली पिंवरा । देखत म मोहत हैं जियरा ।।
कोनो पोलका बारि अंचरा । पीयरी चुनरी ओढ़ उजराहा ।।
गुंड़ा ठिक के सोरा हर्वी । पहिरे पैजन हैं एक जर्बी ।।

शब्दार्थ = गिजगिज = दांत दिखाना (हंसी ठिठौली)। बारि = बाड़ी। गुंड़ा ठिक-ठिक = एक के ऊपर एक। हर्वी = साथ।

भावार्थ = रंग-बिरंगी सजे हुए पीरी के साथ कोई बिछिया पहनी हुए, तो कोई बिना सजे-संवरे ही चली जा रही है। पीरी को देखकर किसका की पहचान हो रही है। सभी में प्रेम के प्रति उमंग है। एक सी हो तो कहूं। यहाँ तो सभी ग्वालिनों का साथ अटूट है। वे कई किस्म की साड़ी जैसी लाल, पीला आदि पहनी हुई हैं। उनको देखते ही मन मोहित हो जाता है। कोई पोलका तो कोई पीली/नीली चुनरी ओढ़े हुई है। एक सिरे से दूसरे सिरे तक सभी एक के बाद एक साथ चल रही हैं।

हरलबिन पाटा तिरछी मोरे । कोनो कांध अंचरा हैं जोरे ।।
कोनो कोनो डोरी खांध ला । कोनो लिये जोतनी कोरा ।।
लड़िया सूरज के रुप पारै । चकमक चकमक चमकत जावै ।।
औ पहिरे रेशमाही चोली । करत जात हैं ठोली बोली ।।
छितराई सरसों भरे जवानी । होत जात है गिद भरवानी ।।
कोनो के लुगरा खिंच लेवै । गुदगुदाय कोनो ला देवै ।।
नथ उतार के पाछू झूकै । औ फेर कोनो पिच्छा ले थूकै ।।
कोनो हाँसे कोनो हँसावै । टेढ़गा देखै मुंह बिचकावै ।।

शब्दार्थ — डोरी = बीगा। जोतनी = मांहि। पाछू = पीछे।

भावार्थ — मथुरा जाती हुई ग्वालिनों का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि कोई हरलबिन पाटा मारकर तो कोई डोरी, बीरी कांधों में आँचल डालकर चल रही है। शरीर पर लटकते हुए आभूषणों पर सूरज की किरणें पड़ने पर चमक रहे हैं। कोई रेशमी चोली पहनी हुई है तो कोई आपस में हँसी-ठिठौली करती हुई एक-दूसरे को चिमट रही है। सभी ग्वालिन

अपनी-अपनी मुस्कराहट से मन में [illegible] एक-दूसरे को [illegible] रही है। कोई किसी की साड़ी को पीछे से खींच रही है तो कोई [illegible] पीछे झुकी हुई है। कोई [illegible] का मुख का [illegible] रही है। इस तरह कोई एक-दूसरे को हँसाते हुए, तो कोई टेढ़ी-मेढ़ी [illegible] से मुंह बिचकाते हुए आगे चली जा रही है।

दिहारी दिहारी [illegible] के [illegible] |
[illegible] मिले के खुशी में [illegible] है [illegible] ।।
[illegible] |
[illegible] ।।
[illegible] ।।
बन [illegible] बीर कहूं जो होई । [illegible] ।।
[illegible] बीर कहूं जो होई । [illegible] ।।
[illegible] । [illegible] ।।
कोनो [illegible] । [illegible] ।।
आगू [illegible] । [illegible] ।।
कोनो [illegible] । [illegible] ।।
[illegible] । [illegible] ।।
[illegible] । [illegible] ।।

शब्दार्थ — दिहारी = [illegible]। [illegible] = फुसफुसाना (धीमी आवाज में बातचीत करना)। [illegible] = मुख-[illegible]। [illegible] = आमने-सामने। [illegible] = [illegible]। [illegible] = धकेलना। [illegible] = [illegible]। [illegible] = इस प्रकार। [illegible] = पाना।

भावार्थ — राधा सहित सभी ग्वालिनों का शरीर [illegible] का है जिनका रूप सबको घायल कर देने वाला है। श्याम मिलन की खुशी में सभी एक दूसरे से बात करते हुए जा रही हैं। [illegible] में [illegible] सभी ग्वालिन बस्ती से बाहर आ रही हैं। जाते हुए उनकी खुली हुई [illegible] के समान दिखाई दे रही है। [illegible] सभी ग्वालिन [illegible] करते हुए जा रही हैं और वे एक दूसरे से बात करते हुए कह रही हैं कि यदि कहीं भी कृष्ण से भेंट हो जाएगी तो [illegible]। [illegible] सखी-साथियों के साथ छिपकर या आड़ लेकर [illegible] और दही को लूट लेना।

कोई कहती है कि उसे अर्थात श्री कृष्ण को पकड़ कर, उसके लाल गाल में गुलेचा (तमाचा) मार कर आगे रखकर सीधे यशोदा के पास ले जायेंगे। राधा कहती है कि तुम लोग कुछ भी करो, लेकिन मैं यदि उसके पास पहुँचती, तो दौड़कर उसके पाँव में गिर जाती। उसे देख–देखकर अपनी आँखों की प्यास बुझाती। एक क्षण के लिए भी उससे अलग नहीं होती, कुछ भी अन्य कार्य न करते हुए बस एक टक (नजर) उसे ही निहारते रहती।

माखन गोरस दही खवातेंव । किरिया ! तोर कहूं जो पातेंव ।।
ऐसन ऐसन करत विचारा । बिन्दावन में पहुँचिन झारा ।।
ओ कोती कान्हा हैं ठाढ़े । लइका मन लाल लिये अगाड़े ।।
माथे मौर लहरिया पागा । खौर चन्दन करे संवागा ।।
पहिरे हैं मजुराही साजू । ओरमे हवै फूंदना बाजू ।।
खुल के पीताम्बरी सुहावै । लौठी देखत लोग मोहावै ।।
भदई अउर पैजनी सोहै । कहै सुन्दरइ ऐसन को है ।।
मोहन देख परत है ऐसे । खासा चेलिक डौका जैसे ।।
मुसकी डारत झारत रजकन । बोले लगिन श्याम संगी सन ।।
एक मनसुभा है रे भाई । आज चलो दहि दूध नगाई ।।

शब्दार्थ :– मौर = मोर। भदई = चप्पल/खड़ाउ।

भावार्थ :– मन में कृष्ण को मक्खन, दूध, दही खिलाने का विचार करती हुई सभी ग्वालिन वृन्दावन पहुँची। दूसरी ओर कान्हा ग्वालों की आड़ लिये खड़े हुए हैं।

माथे पर मोर पंख लगा हुआ पागा, गले में चंदन की माला पहने हुए हैं। बाँह में बाजूबंध बंधा हुआ है। पीला वस्त्र उसकी शोभा को बढ़ा रहा है। उसकी लाठी को देख लोग मोहित हो जाते हैं। उनके पैरों में सुन्दर खड़ाउ और पैजनियाँ शोभायमान है। जैसे मोहन अपने साथियों ग्वाल–बालों का नायक हो। मुस्कुराते हुए श्याम अपने साथियों से अपने मन की बात बताते हुए कहते हैं कि चलो आज दूध, दही लुटेंगे ।

मन तुम्हार जो आतिस, खातेन लेवना लूट ।
लेतेन यार जगात सब, गैताइन के जूट ।।
सुनत कान लूटब दहि दूदे । हो हो करके लइका कूदे ।।

टीका बनि है हरि सग जाबो । चलौ अरे ! दहि माखन खाबो ।।
ऐसन कहि कहि कूदे नाचे । एक बतावै एके टाँचै ।।
कहे श्याम तब सुनी रे भाई । सब झन चढ़ी रूख में जाई ।।
तुमला जब मै करौ इशारा । कूद कूद आही तब झारा ।।
एसो हैंस के कृष्ण कहिन जब । ठेते बोते सखा चढ़िन सब ।।
आगू ठाढ़ भइन हरि जाके । लौठी लिये हाथ परसा के ।।
ओती ले आइन गैताइन । श्याम देख डगडग ले पाइन ।।
झर फर सबो कछोरा छोरिन । ढाँकिन मूड़ बाँह ला तोपिन ।।
ठोठक गइन सब हरि ला देखे । कोचकन लगिन एक ला एके ।।
रेंगे बर आगू मैं होके । परिस हियाव नहीं कोनो के ।।
ले दे के सब चलिन अगारी । सबले चतुरी राधा प्यारी ।।
दू पग चले ठोठक फिर जावै । मन मैं मया उपर डर खावै ।।

शब्दार्थ :– रूख = पेड़। चढ़िन = चढ़ना। परसा = पलाश। गैताइन = ग्वालिन। डगडग = आख भर देखना। छोरिन = छोड़ना। ठोठक = रूक जाना। रेंगे = चलना।

भावार्थ :– श्री कृष्ण अपने सखा ग्वाल–बालों से कहते हैं कि अगर आप सभी लोगों की ईच्छा हो, तो आज ग्वालिनों से उनका दूध, दही, मक्खन लूट कर खा लेते। जब ग्वाल सखा ऐसा सुनते हैं, तब सभी खुशी से नाचने लगते हैं एवं एक–दूसरे को इशारों में ही योजना पर अपनी हामी भरने लगते हैं। तब श्री कृष्ण कहते हैं कि हे ! भाइयों, सभी एक–एक करके पेड़ पर चढ़ जाओ और जब मैं इशारा करूँ, तब नीचे आना। श्री कृष्ण के ऐसे वचनों को सुनकर सभी सखा पेड़ पर चढ़ गये। आगे श्री कृष्ण पलाश की छोटी टहनी लिए खड़े हो गये। दूसरी ओर से ग्वालिनें आईं और श्याम को अचानक सामने पाकर, सभी ग्वालिन जल्दी–जल्दी अपनी साड़ी की कछोरा छोड़ने लगीं, सिर और बाँह को ढकने लगीं। इस प्रकार जब श्री कृष्ण को सामने देखते हैं, तब अचानक वे रूक जाती हैं एवं एक–दूसरे को इशारों–ही–ईशारों में इसकी सूचना देते हैं। आगे बढ़ने की हिम्मत किसी भी ग्वालिन में नहीं है। तब सबसे चतुर राधा रानी सबकी आड़ लेकर दो कदम चलती है, फिर रूक जाती है। उसके हृदय में श्री कृष्ण के प्रति प्रेम उमड़ रहा है। लेकिन मन ही मन डर भी सताने लगा है।

साम्हू में सूंटी लिये, ठाढ़ भइन हरि आय ।
आगू मोर जगात दे, पाछू पाहौ जाय ।।
रोज रोज चोरी कर जावौ । मोला नहीं जगात पटावौ ।।
ठौका आज पकर मैं पायेंव । जातेव भाग तँसने आयेंव ।।
तुमला आज जान तब देहौं । जब सब दिन के सेती लेहौं ।।
मैं कँसन लइका हौं तेला । जानत हौ लइकापन के ला ।।
रकसा रकसिन खेलत मारेंव । नाथेंव बिखहर सांप निकारेंव ।।
गोबर्धन पहाड़ उपकायेंव । छिनिया अँगरी बीच उठायेंव ।।
ऐसन में लैकई दिखावौ । जानत हौ का गुन गोठियावौ ।।
मोला माखन चोर बताथौ । का गुण आपन ऐद लुकाथौ ।।
सुरता है तुम्हला वो दिन के । लुगरा ला लेके सब झिन के ।।
बांधेंव मैं कदम्ब के डारी । कैसन मजा उसि तब भारी ।।
नंगरी नंगरी उपर आयेव । तौन दिना के याद भुलायेव ।।
नाक रगर के कुनरा बजायव । तब सब आपन लुगरा पायेव ।।

शब्दार्थ :– रोज–रोज = प्रतिदिन। पटावौ = वश में करना। सेती = कारण। रकसा–रकसी = राक्षस–राक्षसी। उपकायेंव = जमीन से अलग करना, उखाड़ना। नंगरी =नग्न (निर्वस्त्र)। रगर = रगड़ना।

भावार्थ :– कवि के अनुसार, कान्हा राधा एवं गोपियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम्हें आज मैं तभी जाने दूंगा, जब सब दिन के बराबर माखन, दूध, दही ले लूँगा। मैं कैसा लड़का हूँ, उसको तुम सभी बचपन से जानते हो। बड़े–बड़े राक्षस–राक्षसी को मैंने खेल–खेल में मारा है। कालिया नाग को भी मैंने ही नाथ अर्थात् वश में किया है। गोवर्धन पर्वत को अपने हाथ की छोटी अंगूली में उठा लिया था। ऐसी लीला मैं दिखा चुका हूँ। आप लोग क्या बात करते हो। मुझे माखन चोर बताते हो और अपना स्वभाव छिपा रहे हो। स्मरण है उस दिन का, जब मैं सब की साड़ी लेकर ऊपर कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गया था। तब एक–एक करके सभी निर्वस्त्र होकर उपर आयी थीं, उस दिन को कैसे भूल गये हो। नाक रगड़–रगड़ कर विनती किये, तब सभी अपनी साड़ी पाये थे।

सुनके ऐसन बात ला, सब झन रहिन लजाय ।
आपुस में लागिन कह, कैसे कथैं कन्हाय ।।
एक कोंचक के एक बतावैं । सब सुचमुच सुचमुच मुसकावैं ।।
देखे गोई ! कहव कन्हाई । निच्चट निल्लज होगे दाई ।।
बोलत वोला लाज नइ लागै । अभी ले कैसे कलऊ खरागे ।।
कहाँ के कहाँ जोर चटकाथै । फोकट हमला लाज मराथै ।।
काखर काखर मुंहला धरिहै । जौने सुनिहै हांसी करिहै ।।
चार झनाके बीच बताथै । मूंड हमार नीच करवाथै ।।
ऐसन दूसर जघा बता है । ठट्ठा भला कौन पतियाहै ।।
ले तो भला बता दे कोई । हरि ला ऐसन चाहिय गोई ।।
ऐसे सुनत श्याम मुसकाये । भऊ नचावत आगू आये ।।
सेर बांध चतुरो खोजब आयेंव । नहीं तुम्हार बरोबर पायेंव ।।
चलिहै नहि मोर मेर चलाकी । अभी सउँरिहौ दाई काकी ।।
मानो सोक्ष जगात मड़ा दौ । लेखा करके सबो चुका दौ ।।

शब्दार्थ :– निल्लज = बेशर्म। निच्चट = बिलकुल। फोकट = फालतू। काखर = किसका। ठट्ठा = हंसी मजाक।

भावार्थ :– श्री कृष्ण की ऐसी बातें सुनकर सभी ग्वालिन लजा गयीं और आपस में एक–दूसरे से कहने लगीं कि देखो तो कन्हैया कैसी बातें कर रहा है ? सभी ग्वालिन एक–एक कर मुस्कुरा कर एक–दूसरे को बताने लगी। देखो सखियों ! कन्हैया कितना निर्लज्ज हो गया है ? उसे ऐसे बोलते लाज नहीं आ रही है, अभी से जैसे कलि (कलियुग) का कुप्रताप बढ़ गया हो। कहाँ की बात को कहाँ ले जाकर, हमारा अपमान कर रहा है। हम किसके–किसके मुँह को बन्द करेंगे। जो भी सुनेगा, वह हमारी हँसी उड़ायेगा। ऐसी बात अगर आप किसी को बतायेंगे तो भला कौन मानेगा ? कौन तुम्हें चाहेगा ? ऐसा सुनकर श्याम मुस्कुराते हुए अपनी भौं नचाते हुए आगे आये। मजदूरी देकर भी मेरे जैसे चतुर खोजवाओगे तो नहीं पाओगे। अब सभी को अपनी माँ–काकी याद आ रही है। मेरी बात मानो, सब दिन का हिसाब करके एक जगह सभी दूध, दही, मक्खन रख दीजिए।

एकंक सबो हिसाब के, कर देव मोर चुकाव ।
मझन होत जात है, सोझ हँसत घर जाव ।।
नहिं तो फटफट में पर जाहौ । फोकट इज्जत अपन गंवाहौ ।।
देखत अभी नगा मैं लंहौं । औ फेर सबो हाल कर देहौं ।।
आखिर फेर हाथ का आहै । बात तुम्हार कोन रहि जाहै ।।
रोज बिहनियां मथुरा जाथौ । रात भये ले गोकुल आथौं ।।
भल मानुख के बेटी होकै । काम करत हौ चोरपने के ।।
रौताइन सब सुनत रिसाइन । कब ले श्याम साव बन आइन ।।
चोरी करत उमर सब मेले । भयेव बड़े मोहन छोटे ले ।।
तउन आज ऐसन बोलत हौ । चोट्टी कहि हम ला ठोलत हौ ।।
चोर तुम्हारे ऐल्हे पेल्हे । अउ तुम चोर चोर के चेले ।।
काल चोराय जो माखन खाये । आजेच मोहन गयेव भुलाये ।
मूसर में जब बांधिस लाके । तब हम सबो छोड़ायेन जाके ।।
काले रोयेव अभी भुलायेव । आजेच भोगचंद बन आयेव ।।

शब्दार्थ :– मझन = दोपहर। सोझ = सीधा। बिहनिया = प्रातः काल। भये = होने पर। रिसाना = गुस्सा होना। मानुख = मनुष्य। चोट्टी = चोरी करने वाली। ऐल्हे–पेल्हे = आस–पास। मूसर = ओखली। भोगचंद = खानेवाला।

भावार्थ :– श्री कृष्ण गोपियों से कहते हैं कि एक–एक करके सभी लोग मेरा हिसाब पूरा कर दो, दोपहर होने वाला है और सीधे हँसते हुए वापस घर चले जाओ। नहीं तो परेशानी में पड़ जाओगे और फालतू में अपनी इज्जत भी गंवा बैठोगे। नहीं तो; देखना, हम अभी, सभी का दूध, दही, मक्खन को लुट लेंगे, सभी का हाल बेहाल कर देंगे। न जाने और किस दिन हाथ आओगी। रोज सुबह मथुरा जाते हो, रात होने तक गोकुल आते हो, सभ्य घर की बेटी होकर; ऐसा चोरी का काम करते हो। कृष्ण की इस प्रकार की बातें सुनकर सभी ग्वालिन उनसे रूठकर कहने लगी कि सारी उम्र चोरी करने वाला मोहन आज बड़ा हो गया, जो आज हमें चोर कह रहा है। चोर तो तुम्हारे चारों ओर, तुम्हारे संगी–साथी हैं; कल का माखन चोर मोहन आज सब भूल गया। ओखली में जब माता यशोदा ने तुम्हें बांधा था, तब हम

सभी ने जाकर छुड़वाया था। कल का रोना आज भूल गया, आज बड़ा भोगचंद बन गया है।

कंसराय के राज में, करौं न ऐसन काम ।
घूसड़ अभी जाहै सबो, बनेव जगाती श्याम ।।
चहे भलुक मांग के खावौ । आवौ ! बइठौ ! दौना लावौ ।।
नम जगात बूंद नइ पाहौं । आखिर चुचवावत रहि जाहौं ।।
ऐसे सुनत श्याम मुसकाइन । थोरिक आंखी मार बताइन ।।
चिटिक मुलाजा नइ छू जाथै । मुह में कथौ जैसेन आथै ।।
हँड़िया के मुंह में परई दे । मनखे के मुंह में का सा दै ।।
मात गये हौ सब मोटियारी । नहि खियाल मस्ती में भारी ।।
आँय बाय मनमुखी वकत हौं । भूत धरें अस बात करत हौं ।।
फोकट कौन जीभ पिरवावै । माछी मारै हाथ बसावै ।।
जे मुंह आहै तउन बताहौं । दान दिये बिन जान न पाहौं ।।
आव सबै डूमर कस किरवा । का जानौं तुम दूसर बिरवा ।।
एक कंस ला तुम सुन पायेव । आपन भर आँखांद बतायेव ।।
टेटका के पहुँचान कहाँ ले ? भांड़ी बारी तीर जहाँ ले ।।

शब्दार्थ :– चुचवाना = ठगा सा रह जाना। मुलाजा = उपाय। हँड़िया = हाँड़ी/ मटका। मोटियारी = युवती। माछी = मक्खी।

भावार्थ :– गोपियाँ, श्री कृष्ण पर अपना रौब दिखाते हुए कहती हैं कि राजा कंस के राज्य में ऐसा काम न करें, नहीं तो सब वैसा–का–वैसा ही रह जाएगा। इसलिए हम जैसा कह रहे हैं, वैसा करो; यहाँ दोना लेकर बैठ जाओ और मांग कर दूध, दही, मक्खन खाओ; नहीं तो बूंद भर भी कुछ नहीं मिलेगा, आखिर में पछताते रह जाओगे। ऐसा सुनकर श्री कृष्ण मुस्कुराते हुए थोड़ा आँख मारकर बताने लगे। कोई मुलाजा या उपाय नहीं चलेगा। हाँड़ी के मुँह को पराई से ढक दिया जाता है, लेकिन मनुष्य के मुँह को किससे बंद करोगे। सभी ग्वालिन मदमस्त हो गये हो। कुछ भी बोले जा रहे हो; मानो किसी भूत–प्रेत ने तुम्हें पकड़ लिया हो। बिना मतलब के कौन अपना मुँह तुम लोगों से बजवाये। मक्खी मार कर मैं अपना हाथ गंदा नहीं करना चाहता, बिना दक्षिणा दिये मैं तुम लोगों को जाने नहीं दूँगा। तुम सभी

अभी गुलर (डुमर) के समान कोमल हो, तुम्हें क्या मालूम कि दूसरा पान/बिरवा कैसे होता है। केवल एक कंस को सुनकर तुम लोग अपनी औकात मुझे बता रहे हो, आखिर गिरगिट की पहुँच कहाँ तक है ? खलिहान, बारी के किनारे तक ही रहती है।

पिरथी सरग पताल औ, चन्दा सुरूज लगाय ।
तीन लोक चौदा भुवन, राज हमारेच आय ।।
इहां कंस ला कउन डेरावै । ऐसन कंस हजारों आवैं ।।
चूंदी धरके अभी पछारौं । चोंगी पीयत भरे में मारौं ।।
तेखर डर मोला डरूवाथौं । मोला लइका जान बताथौं ।।
तीर खींच के कहौं चेता के । मोला किरिया नंद बबा के ।।
चाहे मूड़ पटक मर जावो । कतको चाहौं हड्ड बड़ावौ ।।
जबले नहीं जगात मड़ाहौ । कैसनो करौं जान नइ पाहौ ।।
ऐसन सुनत सबो रौताइन । मुंह बिचकाइन और रिसाइन ।।
बिच झाड़ी में सुन्ना पाके । डेरूवावत हौ हमला आके ।।
लोखन केर उघैया आये । छेंकत बेटी पतो पराये ।।
अभी जाय घर अपन बताथन । लिगरी दू के चार लगाथन ।।
तौ फेर श्याम हाल का हो है । हाँसी खेल बात ये नोहै ।।
जाथों वन्घवा मेर बताथौं । भुंसड़ा तोर अभी खेदवाथौं ।।

शब्दार्थ :– सरग = स्वर्ग। सुरूज = सूरज। चोंगी = चोंगा। सुन्ना = सुनसान। बन्धवा = पति। भूसड़ा = मस्ती।

भावार्थ :– श्रीकृष्ण, राधा व गोपियों को कहते हैं कि तीनों लोकों – पृथ्वी, स्वर्ग, पाताल; चंदा और सूरज तथा चौदह भुवनों में मेरा राज है, जो ऐसे कंस से कैसे डर सकता है। जिसका डर मुझे बतला रहे हो, ऐसे हजारों कंस को मैंने आसानी से मार दिया है। मुझे छोटा बच्चा समझ रहे हो। मैं तुम सभी को चेतावनी देता हूँ, नंद बाबा की कसम खाकर कहता हूँ कि चाहे तुम सभी अपना सिर पटक–पकट कर मर जाओ, परन्तु मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। कृष्ण की इस प्रकार की बातें सुनकर सब ग्वालिन मुँह फेरकर गुस्सा हो गईं और कहने लगीं कि बीच झाड़ी में अकेले पाकर हमें डरा रहे हो। दूसरों की बहू–बेटी को इस तरह आगे आकर परेशान कर रहे हो। अभी

घर जाकर अपने पिता, पति से तुम्हारी शिकायत करेंगे और तुम्हारी बात बढ़ा–चढ़ा कर कहेंगे; फिर तुम्हारा क्या हाल होगा, देख लेना। ये हँसी–ठिठोली का खेल नहीं है।

दूरी दूरी जान के, मोहन करत अबेर ।
घुंचौ चलौ अब जान दौ, ढरकन लागिस बेर ।।
लहत बिहत के रहब भला अय । बहूतों के तपबो हर का अय ।।
गाँव गाँव में रथैं गौंटिया । कोनो ऐसन करथैं घीया ।।
जात पाँत में सबो बराबर । नै अय गोई घाट कोनो हर ।।
दू कोरी गेरूवा के मारे । आंखी भइस बेलन्द तुम्हारे ।।
छो छो करके गाय चरावै । राजा कहत लाज नइ आवै ।।
कमरा औ खुमरी ओढ़े बर । बड़े बड़े सांहुत जौरै बर ।।
ढोंग बघारे बर हो जेला । कहै जौन नइ जानै तेला ।।
तुमला कौन बतावैं लाला । जानत हवन तीन पुरखा ला ।।
तुम तो आव नन्द के बेटा । जनमे हवौ जसोदा पेटा ।।
गड़े हवैं गोकुल में नेरवा । घर में है दू कोरी गेरूवा ।।
चोरी कर कर लेवना खायेव । कहूँ बंधायेव कहूँ पिटायेव ।।
नइ चोरी में पेट भरिस जब । श्याम पेंडारा परे लगेव तब ।।
जब तुम दिन भर गाय चराथौ । तब घर में खाये बर पाथौ ।।
सुरता तउन भुला गय मुहना । कहाँ गँवायेन नोई दुहना ।।
पँडरा नन्द जसोदा पँडरी । तुम कैसे हो करलुदुवा हरि ।।

शब्दार्थ :– गेरूवा = जानवर बांधने की रस्सी। सांहुत = शौक। करलठवा = काला (श्यामवर्ण)।

भावार्थ :– लड़की–ही–लड़की जानकर तुम हमसे मुँहजोरी कर रहे हो, हमारे रास्ते से हट जाओ; अब सूरज भी ढलने को हो चला है। अब बहुत हो गया, हर गाँव में गौंटिया रहते हैं, पर क्या कोई ऐसा करता है। जात–पात में सभी बराबर होते हैं। लेकिन क्या कोई इस तरह दूसरे के घाट में आता है ? केवल चालीस गायों को लेकर चराने जाते हो और अपने आप को राजा कहते हो, तुम्हें लाज नहीं आती। कमरा, खुमरी ओढ़कर बड़ा–बड़ा शौक पाल के रखे हो। पाखण्ड करना और झूठ बोलना जिसका काम है, उसे क्या हम

नहीं जानते। तुमको क्या बतायें, तुम्हारी तीन पीढियों को जानते हैं। तुम नंद के बेटा हो, क्या यशोदा के पेट से जन्म लिए हो ? क्या गोकुल में तुम्हारा नेरवा गड़ा हुआ है ? घर में इतनी गायें है, तो फिर चोरी करके मक्खन कौन खाता है ? कभी बांधे जाते हो, तो कभी पिटे जाते हो। चोरी से पेट नहीं भरा, तब यह प्रपंच रचे हो। दिन भर गाय चराते हो, तब घर में तुम्हें खाने को मिलता है। दूध दुहने का पात्र और रस्सी कहाँ है ? यशोदा और राजा नंद तो गौरवर्ण के हैं, फिर तुम कैसे काले रंग (श्याम वर्ण) के हो ?

परिस दुकाल गुपाल जब, हमर राज में आय ।।
दुइ काठ कोदो बदल, तुमला लइन बिसाय ।।
जो राजा भला बतातौं । हाथी कहौ कहाँ ले पातौं ।।
छाता मौर कहां तुम डारे । नौकर चाकर कहां तुम्हारे ।।
गदी बइठौं चंचल डुलावौ । तौ फेर का गुन गाय चरावौ ।।
देखे गोई आखिर अहिरे । राजा होके भदई पहिरे ।।
हीरा मोती लाल कहां गय । गोंगची पहिरे लाज नहिं लागय ।।
पीक मजूर लगाये पागा । लाज चिटिक नइ लागै कागा ।।
फेंकी खुमरी ढंट्ठा बाँधौ । कमरा चीर अंगरखा साधौ ।।
कहिबे संझहा नन्द गौटिया । देहै एक झिन लगा पहटिया ।।
फबित नहीं आवै थोरको के । ठेंगा पकरे राजा होके ।।
बिन मनखे तनखे बिन बाजा । नेवाई के देखेन राजा ।।
ऐसन सुनत श्याम मुसुकाइन । निधड़क निचट अगाड़ी आइन ।।
सूबा मान पोष चारिक ठन । रौताइन राखैं घर दूझन ।।

शब्दार्थ :– दुकाल = अकाल। राज = राज्य। गोंगची = गोमती (एक प्रकार का बीज)। खुमरी = बाँस से बना सर ढकने का साधन। पहटिया = ग्वाला। निधड़क = बेधड़क। निचट = बिलकुल। काठा = तामी (2 किलोग्राम अन्न भरने का लकड़ी अथवा टिन का पात्र)। सूबा = जिला या क्षेत्र।

भावार्थ :– राधा और गोपियाँ, श्री कृष्ण को कहती हैं कि जब अकाल पड़ा, तब हमारे राज्य में आये। दो काठा अनाज के बदले, राजा नंद ने तुम्हें खरीदा है। यदि अपने आप को राजा बताते हो; तो हाथी, पालकी,

छाता, मौर कहाँ हैं, तुम्हारे नौकर–चाकर कहाँ है ? गद्दी में बैठकर चँवर डुलाने वाले सेवक कहाँ है ? एक राजा में गाय चराने का गुण कहाँ से आया? राजा होकर भदई की चप्पल पहने हुए हो। हीरे, मोती, जवाहरात कहाँ गये, इसके स्थान पर गोमती माला को धारण क्यों किये हुए हो ? खुमरी, कमरा पहन कर अपने को राजा कहते हो। थोड़ा भी शोभा नहीं देता है। बिना राज–साज के ऐसा राजा हमने कभी नहीं देखा। इन सभी बातों को सुनकर मुस्कुराते हुए श्री कृष्ण आगे आकर कहते हैं कि अपने क्षेत्र के चार लोगों का ऐसे ही हम पालन–पोषण करते हैं और तुम्हारी तरह दो ग्वालिन तो मेरे घर में हमेशा रहती हैं।

कोयली अस बासत हवौ, कहौ न बात विचार ।।
मुहु लग्गी हो गये हव, गोकुल के दूचार ।।
तभे सभे मिलकी मारत हौ । तुम मोला निंदरे डारत हौ ।।
सुनत ओ पूछत हौं तोला । कब जन्मत देखे हस मोला ।।
कहाँ ले नन्द जसोदा आइन । जानथौं इन्हला कौन बनाइन ।।
महीं सिरजथौं महीं चरातौं । महीं जियाथां मही मारथौं ।।
मोर बिना पाता नइ हालै । आखिर तुम ला कहों कहाँ ले ।।
पाप अघात भुंया गरूवाइस । मोर मेर रोवत तब आइस ।।
तब मैं मन में मया मड़ायेंव । मनखे के चोला धर आयेंव ।।
जेमा मनुबा चारि करि हैं । लीला गाहै सुनिहै तरिहै ।।
तेला अड़हा मन का जानौ । टेड़गा–सोझहा अपने तानौं ।।
कमरा के तुम निंदा करथौं । वहीं कमरहा पाले परथौ ।।
का जानौ कमरा के गुना ला । दही ओ ओ कपसा एके तुमला ।।
तीन लोक में खोजवांयेव । कमरा के न बरोबर पायेंव ।।
ग्वालिन सुनत कहन अस लागिन । कोन गोंठ ला कहां निकालिन ।।

शब्दार्थ :– कोयली = कोयल। निंदरे = आँखों में समा लेना। जियाथौं = जीवन देना। मारथौं = मृत्यु। गरूवाइस = बढ़ने पर, वजन होने पर। खोजवायेव = खोजना/ढूढना।

भावार्थ :– श्री कृष्ण पुनः राधा और ग्वालिन लोगों से कहते हैं कि कोयली जैसे आप सभी बोल रही हैं, लेकिन कोई भी बात सोच विचार कर नहीं कर रही हैं। मुँहलग्गी हो कर गोकुल के चारों ओर घुमती रहती हो। आँखों से बातकर मुझे तुम लोग फँसा रहे हो। अर्थात् माया के बन्धन में बाँध रहे हो। मैं तुम लोगों से पूछता हूँ कि कब यशोदा के पेट से मुझे जन्म लेते देखा है ? राजा नँद और माता यशोदा कहाँ से आये ? किसने इनको यहाँ बसाया है ? मैंने ही इन्हें बनाया और बसाया है। मैं ही जन्म देता हूँ और मैं ही मृत्यु। मेरे बगैर पत्ता भी हिल नहीं सकता। आखिर तुम्हें क्या बतलाऊँ। मैं ही सर्व शक्तिमान हूँ। पृथ्वी पर पाप बढ़ने पर सभी लोग रोते हुए मेरे पास आये, तब मैंने माया रची और मनुष्य का रूप धारण करके लीला की रचना की। मेरे इस चरित्र को जो सुनेगा, वह भवसागर पार कर जायेगा अर्थात् मेरी भक्ति से उसका कल्याण हो जायेगा। जिस कमरा की निंदा तुम कर रहे हो, उसके मर्म को क्या जानोगे ? उसी कमरा के धारण करने वाले (कमरिहा) के साथ मुँह लगते हो। तीनों लोकों में कमरा के बराबर कुछ नहीं। ग्वालिन ऐसा सुनकर कहने लगीं कि किस बात को कहाँ निकाल रहे हैं। अर्थात् हम लोग दूसरा बोल रहे थे और आप बात को कहीं और ले गए।

■■

आप किन अर्थों में मुझे 'तुम' कहते हैं; जबकि मेरी शेष जिंदगी आपसे अधिक है, मैं आपसे अधिक ज्ञानार्जन कर सकता हूँ, अधिक कार्य कर सकता हूँ, अधिक सेवा भी कर सकता हूँ।

– डॉ0 रमेश टण्डन फूलबंधिया

16.

दानलीला (सुन्दरलाल शर्मा) की समीक्षा

– मनीष कुमार कुर्रे *

सेमेस्टर – IV, प्रश्नपत्र– IV (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य), इकाई 04

पं0 सुन्दरलाल शर्मा की रचनाओं में 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' अधिक ख्याति प्राप्त कृति है। यह एक खण्डकाव्य है। श्री कृष्ण के जीवन के मार्मिक प्रसंगों को लेकर लिखी गई यह रचना, छत्तीसगढ़ की आँचलिक संस्कृति और सभ्यता का प्रमाणिक दस्तावेज है। इस अद्वितीय काव्य की रचना सन् 1905 में की गई थी। सन् 1906 में इसका मुद्रण बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा कलकत्ता के 21 हरिसन रोड स्थित नरसिंह प्रेस में किया गया। इसका द्वितीय प्रकाशन सन् 1915 में और तृतीय प्रकाशन 1924 में हुआ। कवि ने इस काव्य को अपने गुरू पंडित रामप्रकाश मिश्र को समर्पित किया है।

श्री माधवराव सप्रे, जो पं0 सुन्दरलाल शर्मा जी के अच्छे मित्र थे, ने इस काव्य की प्रशंसा करते हुए पत्र लिखा था कि "मुझे विश्वास है कि भगवान कृष्ण की लीला द्वारा मेरे छत्तीसगढ़ी निवासी भाईयों का अवश्य सुधार होगा। मेरी आशा और भी दृढ़ हो जाती है, जब मैं देखता हूँ कि छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है।" [1]

जब छत्तीसगढ़ी दानलीला प्रकाशित हुई, तब उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 'रायबहादुर हीरालाल' ने लिखा था – "जउने हर अइसन बनाइस हे, तउने हर नाम कमाइस हे।" उनका यह कथन सर्वथा सार्थक है, क्योंकि भविष्य में जब भी छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य लिखा जायेगा, इस

* जन्मतिथि : 21 मई 1991, पिता : श्री यादव प्रसाद कुर्रे, माता : श्रीमती दानप्रभा कुर्रे, शिक्षा : एम ए (हिन्दी), सेट (राजनीति विज्ञान), बी0 एड0, पीजीडीसीए, सम्प्रति : [illegible] राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़, पता : मेरेगाँव, [illegible], जिला – राजनांदगाँव, छ0ग0, सम्पर्क : 9669226953, [illegible]
ईमेल – [illegible]